A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ की भूमिका

Dr. Nirmala Joshi[1], Abhishek Bhatt[2]

1 Associate Professor and Head, Department of Music, Government Post Graduate College, Ranikhet, Almora, Uttarakhand
2 Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Government Post Graduate College, Ranikhet, Almora, Uttarakhand

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Joshi, N. and Bhatt, A. (2026). hindustani shastriya sangeet mein riaz ki Bhumika. Sindhu, 14(1), 273-278.

सारांश

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण, राग-विस्तार तथा कलात्मक अभिव्यक्ति के विकास का मूल आधार माना जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में रियाज़ की संकल्पना, उसके विभिन्न आयामों तथा शास्त्रीय गायन में उसकी उपयोगिता का अध्ययन किया गया है। यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक एवं साहित्य-आधारित पद्धति पर आधारित है, जिसमें संगीत संबंधी पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं पारंपरिक संगीत शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नियमित एवं अनुशासित रियाज़ के माध्यम से साधक तकनीकी दक्षता, मानसिक एकाग्रता तथा कलात्मक परिपक्वता प्राप्त करता है। गुरु-शिष्य परंपरा में भी रियाज़ को संगीत-साधना का अनिवार्य तत्व माना गया है। आधुनिक डिजिटल युग में भी शास्त्रीय संगीत की गुणवत्ता एवं शुद्धता बनाए रखने हेतु रियाज़ की प्रासंगिकता बनी हुई है (Ranade, 2008; Ghosh, 2011)।

कुंजी शब्द: रियाज़, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, स्वर-साधना, गुरु-शिष्य परंपरा, संगीत शिक्षा, संगीत-साधना

भूमिका

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की एक अत्यंत समृद्ध एवं साधनात्मक विधा है। इसमें केवल सुरों का शुद्ध प्रयोग ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि स्वर, लय, राग, भाव तथा अनुशासन का संतुलित समन्वय आवश्यक माना जाता है। इस समन्वय को विकसित करने का सबसे प्रभावी माध्यम रियाज़ है। रियाज़ शास्त्रीय संगीत की वह सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से साधक अपनी संगीतात्मक क्षमता को विकसित एवं परिष्कृत करता है (Ghosh, 2011)।

भारतीय संगीत परंपरा में रियाज़ को केवल अभ्यास नहीं, बल्कि साधना का स्वरूप माना गया है। नियमित एवं अनुशासित अभ्यास के माध्यम से ही कलाकार स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण तथा राग-विस्तार में दक्षता प्राप्त करता है। शास्त्रीय संगीत में प्रतिभा महत्वपूर्ण अवश्य है, किंतु निरंतर रियाज़ के बिना प्रतिभा का पूर्ण विकास संभव नहीं माना जाता (Ranade, 2008)। गुरु-शिष्य परंपरा में भी रियाज़ का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का आधार निरंतर अभ्यास एवं अनुशासन रहा है। गुरु के मार्गदर्शन में किया गया रियाज़ साधक को तकनीकी दक्षता के साथ-साथ मानसिक एकाग्रता एवं आत्म-अनुशासन भी प्रदान करता है (Naimpalli, 2005)।

आधुनिक समय में संगीत शिक्षा के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं। ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल माध्यम तथा तकनीकी संसाधनों के विकास के बावजूद रियाज़ की आवश्यकता आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण बनी हुई है। शास्त्रीय संगीत की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता का आधार आज भी नियमित साधना ही मानी जाती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध उद्देश्य

- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ के महत्व का अध्ययन करना।
- स्वर-साधना एवं तकनीकी विकास में रियाज़ की भूमिका को स्पष्ट करना।
- गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ की उपयोगिता का विश्लेषण करना।
- शास्त्रीय गायन में मानसिक अनुशासन एवं एकाग्रता के विकास में रियाज़ के योगदान का अध्ययन करना।
- आधुनिक संगीत शिक्षा एवं डिजिटल युग में रियाज़ की प्रासंगिकता को समझना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं साहित्य-आधारित शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, लेखों तथा उपलब्ध ऑनलाइन स्रोतों का उपयोग किया गया है। विषय के विश्लेषण के लिए पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा, शास्त्रीय गायन की व्यवहारिक प्रक्रिया तथा संगीत शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों का अध्ययन किया गया है। इस शोध में रियाज़ की संकल्पना, स्वर-साधना, तकनीकी विकास, मानसिक अनुशासन तथा संगीत शिक्षण में उसकी भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान विभिन्न संगीत विद्वानों एवं संगीतज्ञों के विचारों का भी संदर्भ लिया गया है (Ranade, 2008; Ghosh, 2011)।

रियाज़ की संकल्पना

रियाज़ का सामान्य अर्थ अभ्यास से लगाया जाता है, किंतु हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इसका अर्थ अत्यंत व्यापक एवं गहन है। यह केवल किसी बंदिश या स्वर-पैटर्न की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि एक अनुशासित एवं निरंतर संगीत-साधना है, जिसके माध्यम से साधक अपनी गायकी अथवा वादन शैली को विकसित करता है। भारतीय संगीत परंपरा में रियाज़ को साधना का रूप माना गया है, जो कलाकार को तकनीकी दक्षता, मानसिक एकाग्रता तथा कलात्मक परिपक्वता प्रदान करता है (Ranade, 2008)।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ का उद्देश्य केवल स्वर उत्पन्न करना नहीं, बल्कि स्वर को शुद्ध, संतुलित एवं भावपूर्ण बनाना है। स्वर-साधना, अलंकार-अभ्यास, सरगम, मींड, गमक, खटका, मुरकी तथा राग-विस्तार जैसे विविध अभ्यास रियाज़ के अंतर्गत सम्मिलित किए जाते हैं। इन सभी का उद्देश्य साधक की प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली एवं परिष्कृत बनाना होता है (Ghosh, 2011)। रियाज़ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी नियमितता है। यह एक अल्पकालिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवनभर चलने वाली साधना है। निरंतर अभ्यास के माध्यम से साधक में धैर्य, आत्म-अनुशासन तथा आत्म-अवलोकन की क्षमता विकसित होती है। शास्त्रीय संगीत में आत्म-अवलोकन का विशेष महत्व है, क्योंकि अपनी त्रुटियों को पहचानकर उनमें सुधार करना ही वास्तविक प्रगति का आधार माना जाता है।

भारतीय संगीतज्ञों ने भी रियाज़ को संगीत की आत्मा माना है। गुरु-शिष्य परंपरा में प्रातःकालीन रियाज़, स्वर-साधना तथा नियमित अभ्यास को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। यही कारण है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा में रियाज़ को कलाकार की सफलता एवं परिपक्वता का मूल आधार माना गया है (Naimpalli, 2005)।

शास्त्रीय गायन में रियाज़ का महत्व

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में रियाज़ का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण, राग-विस्तार तथा भाव-अभिव्यक्ति पर आधारित होती है, और इन सभी तत्वों के विकास में रियाज़ की केंद्रीय भूमिका होती है। नियमित एवं अनुशासित अभ्यास के माध्यम से ही साधक अपनी गायकी को प्रभावशाली एवं परिष्कृत बना पाता है (Ranade, 2008)। शास्त्रीय गायन में स्वर-शुद्धि को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। प्रत्येक राग का अपना विशिष्ट स्वरूप एवं भाव होता है, जिसे सही प्रकार से प्रस्तुत करने के लिए स्वर का स्थिर एवं संतुलित होना आवश्यक है। रियाज़ के माध्यम से साधक स्वर की स्पष्टता, स्थिरता तथा नियंत्रण प्राप्त करता है। यदि स्वर असंतुलित अथवा अशुद्ध हों, तो राग का प्रभाव भी कम हो जाता है (Ghosh, 2011)।

रियाज़ से आवाज़ में लचीलापन एवं मधुरता विकसित होती है। आलाप, तान, बोल-तान तथा राग-विस्तार जैसे जटिल पक्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक होता है। शास्त्रीय गायन में मंचीय प्रस्तुति के दौरान कलाकार की वास्तविक क्षमता उसी रियाज़ पर आधारित होती है, जो उसने वर्षों तक अनुशासित रूप से किया हो। यही कारण है कि संगीतज्ञ रियाज़ को मंचीय सफलता का मूल आधार मानते हैं। शास्त्रीय संगीत में रियाज़ मानसिक एवं शारीरिक दोनों स्तरों पर प्रभाव डालता है। नियमित अभ्यास से साधक में आत्मविश्वास, धैर्य तथा एकाग्रता का विकास होता है। इसके अतिरिक्त श्वास-नियंत्रण, उच्चारण की स्पष्टता तथा स्वर-परिसर का विस्तार भी रियाज़ के माध्यम से संभव होता है (Naimpalli, 2005)।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में रियाज़ केवल अभ्यास नहीं, बल्कि संगीत-साधना की आधारभूत प्रक्रिया है। इसके बिना शास्त्रीय संगीत में परिपक्वता, गहराई एवं प्रभावशीलता प्राप्त करना संभव नहीं माना जाता।

स्वर-साधना एवं तकनीकी विकास

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्वर-साधना को संगीत शिक्षा का मूल आधार माना जाता है। स्वर की शुद्धता, स्थिरता एवं संतुलन के बिना किसी भी राग की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति संभव नहीं होती। रियाज़ स्वर-साधना को व्यवस्थित एवं अनुशासित रूप प्रदान करता है, जिसके माध्यम से साधक अपने स्वर पर नियंत्रण स्थापित करता है (Ghosh, 2011)।

स्वर-साधना के अंतर्गत साधक विभिन्न प्रकार के अभ्यास करता है, जैसे—सरगम, अलंकार, मींड, गमक, खटका, मुरकी तथा सप्तक-अभ्यास। इन अभ्यासों का उद्देश्य स्वर की स्पष्टता एवं लचीलेपन को विकसित करना होता है। नियमित रियाज़ के माध्यम से गायक स्वर के सूक्ष्म अंतर को पहचानने एवं नियंत्रित करने में सक्षम हो जाता है। यही क्षमता आगे चलकर उसकी गायकी को प्रभावशाली एवं परिपक्व बनाती है। तकनीकी दृष्टि से रियाज़ voice training का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है। इसके द्वारा श्वास-नियंत्रण, स्वर-परिसर का विस्तार, आलाप-निर्माण तथा तान-प्रस्तुति में सुधार होता है। शास्त्रीय गायन में उच्च एवं निम्न सप्तकों में संतुलित स्वर-प्रयोग अत्यंत आवश्यक होता है, जो केवल निरंतर अभ्यास से ही संभव हो पाता है (Ranade, 2008)। रियाज़ साधक को उसके स्वर-क्षेत्र एवं गायन क्षमता का बोध कराता है। निरंतर अभ्यास के माध्यम से कलाकार यह समझने लगता है कि किस प्रकार की साधना उसके स्वर के लिए उपयुक्त है तथा किन क्षेत्रों में अधिक सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार रियाज़ तकनीकी दक्षता के साथ-साथ आत्म-ज्ञान का भी माध्यम बन जाता है।

आधुनिक संगीत शिक्षा में भी स्वर-साधना एवं तकनीकी विकास के लिए रियाज़ को अनिवार्य माना जाता है। चाहे शिक्षण की पद्धति पारंपरिक हो अथवा डिजिटल, शास्त्रीय संगीत में प्रगति का आधार आज भी नियमित एवं अनुशासित अभ्यास ही माना जाता है (Naimpalli, 2005)।

गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ की भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का आधार निरंतर अभ्यास, अनुशासन तथा समर्पण माना जाता रहा है। गुरु केवल संगीत संबंधी ज्ञान प्रदान नहीं करता, बल्कि साधक को रियाज़ की सही दिशा एवं पद्धति भी सिखाता है। इसी मार्गदर्शन के माध्यम से विद्यार्थी अपनी गायकी अथवा वादन शैली को परिष्कृत करता है (Ghosh, 2011)।

गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि संगीत के प्रति साधक में समर्पण, धैर्य एवं अनुशासन विकसित करना भी होता है। गुरु साधक की व्यक्तिगत क्षमता एवं स्वर-प्रकृति के अनुसार अभ्यास निर्धारित करता है। किस राग पर अधिक ध्यान देना है, किस स्वर में सुधार की आवश्यकता है तथा किस प्रकार की साधना उपयुक्त होगी—इन सभी बातों का निर्धारण गुरु के मार्गदर्शन में किया जाता है (Ranade, 2008)।

गुरु के सान्निध्य में किया गया रियाज़ अधिक प्रभावी माना जाता है, क्योंकि गुरु साधक की त्रुटियों को तुरंत पहचानकर उनमें सुधार कर सकता है। इससे संगीत शिक्षा की प्रक्रिया अधिक सटीक एवं परिणामकारी बनती है। पारंपरिक संगीत शिक्षा में प्रातःकालीन रियाज़, स्वर-साधना तथा बार-बार दोहराव की विशेष परंपरा रही है, जिसने अनेक महान संगीतज्ञों को जन्म दिया। गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ का संबंध केवल अभ्यास से नहीं, बल्कि संस्कार एवं व्यक्तित्व-निर्माण से भी है। नियमित साधना के माध्यम से साधक में विनम्रता, आत्म-अनुशासन, एकाग्रता तथा समर्पण की भावना विकसित होती है। यही गुण आगे चलकर उसे एक गंभीर एवं उत्तरदायी कलाकार बनाते हैं (Naimpalli, 2005)। आधुनिक संस्थागत संगीत शिक्षा एवं डिजिटल शिक्षण पद्धतियों के विकास के बावजूद गुरु का मार्गदर्शन आज भी महत्वपूर्ण बना हुआ है। शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं को समझने एवं उन्हें व्यवहार में उतारने के लिए गुरु-शिष्य संबंध तथा नियमित रियाज़ दोनों ही अनिवार्य माने जाते हैं।

मानसिक अनुशासन एवं एकाग्रता में रियाज़ की भूमिका

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ का प्रभाव केवल तकनीकी विकास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह साधक के मानसिक एवं व्यक्तित्वगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नियमित एवं अनुशासित अभ्यास के माध्यम से साधक में धैर्य, आत्म-नियंत्रण तथा मानसिक एकाग्रता का विकास होता है। संगीत-साधना की प्रक्रिया मन को स्थिर एवं केंद्रित बनाने में सहायक सिद्ध होती है (Ranade, 2008)।

रियाज़ के दौरान साधक बार-बार स्वर, लय तथा राग के विभिन्न पक्षों का अभ्यास करता है। यह निरंतर प्रक्रिया मन को एक बिंदु पर केंद्रित करना सिखाती है। एकाग्रता के बिना न तो स्वर-साधना संभव है और न ही राग-विस्तार की गहराई को समझा जा सकता है। इस प्रकार रियाज़ मानसिक स्थिरता एवं आत्म-अवलोकन की क्षमता को विकसित करता है (Ghosh, 2011)।

नियमित रियाज़ साधक के आत्मविश्वास को भी सुदृढ़ बनाता है। मंचीय प्रस्तुति के समय कलाकार की सफलता उसके अभ्यास एवं मानसिक संतुलन पर निर्भर करती है। निरंतर साधना के माध्यम से कलाकार प्रस्तुति के दौरान उत्पन्न होने वाले तनाव एवं भय पर नियंत्रण प्राप्त करता है। यही कारण है कि संगीतज्ञ रियाज़ को मानसिक दृढ़ता का आधार मानते हैं।

रियाज़ का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-विकास पर भी देखा जा सकता है। नियमित अभ्यास के माध्यम से उनमें समयबद्धता, अनुशासन तथा समर्पण की भावना विकसित होती है। संगीत-साधना व्यक्ति को धैर्यपूर्वक कार्य करने एवं निरंतर प्रयास करते रहने की प्रेरणा देती है, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोगी सिद्ध होती है (Naimpalli, 2005)।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि रियाज़ केवल संगीत-कौशल के विकास का माध्यम नहीं, बल्कि मानसिक अनुशासन, आत्म-नियंत्रण एवं एकाग्रता को विकसित करने वाली एक महत्वपूर्ण साधना प्रक्रिया भी है।

आधुनिक संदर्भ में रियाज़ की प्रासंगिकता

आधुनिक युग में संगीत शिक्षा एवं प्रस्तुति के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। तकनीकी विकास, डिजिटल माध्यमों तथा ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियों के कारण संगीत सीखने के अनेक नए साधन उपलब्ध हुए हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं, वीडियो लेक्चरों तथा मोबाइल अनुप्रयोगों के माध्यम से भी संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके बावजूद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ की आवश्यकता एवं महत्व आज भी पूर्ववत् बना हुआ है (Ghosh, 2011)।

शास्त्रीय संगीत की प्रकृति ऐसी है कि उसमें वास्तविक प्रगति केवल नियमित एवं अनुशासित अभ्यास के माध्यम से ही संभव होती है। तकनीकी साधन सीखने में सहायक अवश्य हो सकते हैं, किंतु वे रियाज़ का विकल्प नहीं बन सकते। स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण, राग-विस्तार तथा भाव-अभिव्यक्ति जैसे सूक्ष्म पक्षों में दक्षता प्राप्त करने के लिए निरंतर साधना अनिवार्य मानी जाती है (Ranade, 2008)।

वर्तमान समय में अनेक विद्यार्थी शीघ्र सफलता एवं त्वरित परिणाम की अपेक्षा रखते हैं, जबकि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत धैर्य, समर्पण एवं दीर्घकालिक साधना की मांग करता है। रियाज़ साधक में यही धैर्य एवं अनुशासन विकसित करता है। यह केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि संगीत को आत्मसात करने की एक निरंतर साधना है।

डिजिटल युग में रिकॉर्डिंग तकनीक, ऑनलाइन मंच तथा सोशल मीडिया ने संगीत के प्रचार-प्रसार को व्यापक बनाया है। इससे कलाकारों को अपनी प्रस्तुति अधिक लोगों तक पहुँचाने का अवसर मिला है। किंतु शास्त्रीय संगीत की गुणवत्ता एवं शुद्धता बनाए रखने के लिए आज भी नियमित रियाज़ को अनिवार्य माना जाता है। बिना अभ्यास के संगीत प्रस्तुति में गहराई, स्थिरता एवं प्रभावशीलता बनाए रखना संभव नहीं है (Naimpalli, 2005)।

इस प्रकार आधुनिक संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी विकास एवं डिजिटल संसाधनों के विस्तार के बावजूद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की आत्मा आज भी रियाज़ में ही निहित है। नियमित साधना ही कलाकार को तकनीकी दक्षता, मानसिक परिपक्वता एवं कलात्मक उत्कृष्टता प्रदान करती है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य है। यह केवल अभ्यास की प्रक्रिया नहीं, बल्कि संगीत-साधना का मूल आधार है। स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण, राग-विस्तार तथा भाव-अभिव्यक्ति जैसे शास्त्रीय संगीत के सभी प्रमुख पक्ष रियाज़ के माध्यम से ही विकसित होते हैं। निरंतर एवं अनुशासित अभ्यास कलाकार की तकनीकी दक्षता तथा कलात्मक परिपक्वता को सुदृढ़ बनाता है (Ranade, 2008)।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि रियाज़ का प्रभाव केवल संगीत-कौशल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह साधक के मानसिक एवं व्यक्तित्वगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नियमित साधना के माध्यम से साधक में आत्म-अनुशासन, धैर्य, एकाग्रता तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। यही गुण एक कलाकार को मंचीय प्रस्तुति के लिए सक्षम एवं प्रभावशाली बनाते हैं (Ghosh, 2011)।

गुरु-शिष्य परंपरा के संदर्भ में भी रियाज़ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई है। पारंपरिक संगीत शिक्षा में गुरु के मार्गदर्शन में किया गया अभ्यास अधिक प्रभावी एवं परिणामकारी माना जाता है। गुरु साधक की त्रुटियों को पहचानकर उन्हें सुधारने में सहायता करता है, जिससे संगीत शिक्षा की प्रक्रिया अधिक सटीक एवं व्यवस्थित बनती है (Naimpalli, 2005)।

आधुनिक डिजिटल युग में संगीत शिक्षा के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं, किंतु रियाज़ की आवश्यकता आज भी अपरिवर्तित बनी हुई है। तकनीकी साधन एवं ऑनलाइन शिक्षण संगीत सीखने में सहायक हो सकते हैं, परंतु वे नियमित साधना का स्थान नहीं ले सकते। शास्त्रीय संगीत की गहराई एवं शुद्धता बनाए रखने के लिए आज भी अनुशासित रियाज़ को अनिवार्य माना जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा, गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता को बनाए रखने में रियाज़ की भूमिका केंद्रीय एवं आधारभूत है। यह केवल तकनीकी अभ्यास नहीं, बल्कि संगीत के प्रति समर्पण एवं साधना की सतत प्रक्रिया है।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रियाज़ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य है। यह स्वर-शुद्धि, लय-नियंत्रण, राग-विस्तार तथा कलात्मक अभिव्यक्ति का मूल आधार है। नियमित एवं अनुशासित रियाज़ के माध्यम से ही साधक तकनीकी दक्षता, मानसिक एकाग्रता तथा कलात्मक परिपक्वता प्राप्त करता है (Ranade, 2008)।

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रियाज़ केवल अभ्यास की प्रक्रिया नहीं, बल्कि संगीत-साधना का एक व्यापक एवं सतत स्वरूप है। यह साधक को आत्म-अनुशासन, धैर्य तथा आत्मविश्वास प्रदान करता है, जो एक सफल कलाकार के लिए अत्यंत आवश्यक गुण माने जाते हैं। स्वर-साधना एवं तकनीकी विकास के साथ-साथ रियाज़ मानसिक स्थिरता एवं व्यक्तित्व-विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (Ghosh, 2011)। गुरु-शिष्य परंपरा में रियाज़ को संगीत शिक्षा का आधार माना गया है। गुरु के मार्गदर्शन में किया गया अभ्यास साधक को संगीत की सूक्ष्मताओं को समझने एवं उन्हें प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने में सहायता करता है। आधुनिक डिजिटल युग में संगीत शिक्षण के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं, किंतु हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की आत्मा आज भी नियमित साधना एवं अनुशासित रियाज़ में ही निहित है (Naimpalli, 2005)।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परंपरा, शुद्धता एवं गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए रियाज़ को केंद्रीय स्थान देना आवश्यक है। यह केवल तकनीकी अभ्यास नहीं, बल्कि संगीत के प्रति समर्पण, साधना एवं आध्यात्मिक जुड़ाव की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

संदर्भ

Badasheshi, R. K. (2025). Importance of riyaz and its forms. Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music.
Bor, J. (1999). The raga guide: A survey of 74 Hindustani ragas. Nimbus Records.
Chaudhuri, A. (2021). The most secret part of yourself: What riyaz means to the classical musician. Scroll.in.
Deva, B. C. (1992). An introduction to Indian music. Publications Division.
Ghosh, N. (2011). The Oxford encyclopaedia of the music of India. Oxford University Press.
Jairazbhoy, N. A. (1995). The rāgs of North Indian music. Popular Prakashan.
Naimpalli, S. (2005). Theory and practice of tabla. Popular Prakashan.
Ranade, A. (2008). Perspectives on music: Ideas and theories. Promilla & Co.
Sharma, S. (2018). Fundamentals of Indian classical music. Kanishka Publishers.
Vatsyayan, K. (1996). Indian classical music and dance. Publications Division.